[This question paper contains 6 printed pages.]

531 *आपका अनुक्रमांक* _____

B.A. (Prog.) / II **B**

(T)

HINDI DISCIPLINE – Paper II

हिन्दी अनुशासन – प्रश्नपत्र II

(हिन्दी गद्य विधाएँ, उपन्यास और गद्य साहित्य का इतिहास)

(प्रवेश वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिये/NCWEB के विद्यार्थियों के लिये)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 75*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट :- प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी A) के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं। तथापि ये अंक NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे।

1 सप्रसंग व्याख्या कीजिए :- (8+8)

(क) "मुझे कई बार ऐसा लगता है कि जो समय सबके लिए यहाँ के निवासियों के लिए, बीत गया है, वह मेरे लिए अभी तक जीवित है, प्रतीक्षारत है, और जब तक मैं उसे अन्य प्राणियों की तरह

P.T.O.

भोग नहीं लूँगा, वह मुझसे छूटेगा नहीं। गड़े मुरदे ? वे हर आदमी के भीतर हैं - जब कभी मध्य-यूरोप से गुज़रता हूँ, मुझे उनका ठंडा स्पर्श महसूस होने लगता है। पूर्वग्रह-ग्रस्त नहीं है, किन्तु आज भी मैं किसी जर्मन को देखता हूँ तो मेरे भीतर एक फ़िज़ूल, बेमानी-सी बेचैनी होने लगती है।"

अथवा

"अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर उसके लिए माफ़ी की रिआयत की रत्तीभर भी उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया। घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता, ज़रा आवाज़ न हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहज़ोर पहलवान भी इतनी तेज़ी से उसे न खींच सकता था।"

(ख) "शिद्धिरगंज कभी भी नहीं भूलेगा कि एक दिन आदमी के बनाए अकाल ने उसका सत्यानाश कर दिया था। जो आदमी अपनी हड्डियों से - दाधीचि की हड्डियों से - यह अमर कथा लिख गए हैं, बंगाल उनकी ज्वलंत स्मृति को कभी नहीं भुलाएगा।"

मेरे मुँह से हठात् निकल गया - 'उसे हिन्दुस्तान कभी नहीं भुलाएगा महाचार्यजी, मानवता उसे कभी नहीं भुला सकेगी।'

अथवा

"जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने की अधिकारी है, समाज में उसका कुछ स्थान है, उसके सामने वह

दो वक्त भोजन की थाली रख देने से अपने कर्तव्य से छुट्टी पा जाती है। वह घी, चीनी के डिब्बों में इतनी रमी हुई है कि वही उसकी संपूर्ण दुनिया बन गई है।"

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- (4×4)

(i) 'मजदूरी और प्रेम' का प्रतिपाद्य लिखिए।

(ii) 'पुरूष का अहं स्त्री को कभी बराबर का दर्जा देने को तैयार नहीं' - बिबिया के आधार पर विचार कीजिए।

(iii) बुधिया के व्यक्तित्व का उद्घाटन कीजिए।

(iv) 'सूखी डाली' में परिवार के विघटन के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

(v) करूणा और श्रद्धा में क्या अन्तर है ?

(vi) 'ठाकुर का कुआँ में वर्ग-वैषम्य के यथार्थ की प्रस्तुति की गई है' - विचार कीजिए।

(vii) लेखक बर्लिन क्यों जाना चाहता था ?

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए :- (1×3)

(i) पेसेंजर ट्रेन आने से पहले गजाधर बाबू को नाश्ता कौन कराता था ? नाश्ते में वे क्या खाते थे ?

(ii) 'बड़ा वास्तव में कोई उग्र या दर्जे से नहीं होता, बड़ा तो बुद्धि से होता है' - दादा जी ने ये शब्द किसके संदर्भ में किसे कहे ?

(iii) बंगाल के अकाल के दौरान कौन-कौन सी बीमारियाँ फैलीं ?

(iv) किस के चरणों के आघात से अशोक के वृक्ष पर फूल खिलते थे ?

(v) बिबिया ने चाकू दिखा कर किसे धमकाया और क्यों ?

(vi) रजिस्टर देखकर किसने भोलाराम के जीव के गायब होने की जानकारी दी ? वह कितने दिन से गायब था ?

(vii) आइसलैंड में लैक्सनेस को किस नाम से पुकारा जाता था ?

3. किसी **एक** की व्याख्या कीजिए :- (8)

(i) "उस दिन से जालपा के पति स्नेह में सेवा भाव का उदय हुआ। वह स्नान करने जाता तो उसे अपनी धोती चुनी हुई मिलती। आले पर तेल और साबुन भी रखा हुआ पाता। जब दफ्तर जाने लगता तो जालपा उसके कपड़े लाकर सामने रख देती। पहले पान माँगने पर मिलते थे, अब जबर्दस्ती खिलाए जाते थे। जालपा उसका रुख देखा करती। उसे कुछ कहने की जरूरत न थी। यहाँ तक कि जब वह भोजन करने बैठता तो वह पंखा झला करती। पहले वह अनिच्छा से भोजन बनाने जाती थी और उस पर भी बेगार-सी टालती थी, अब बड़े प्रेम से रसोई में जाती। चीज़ें वही बनती, पर उनका स्वाद बढ़ गया था।" (गबन)

(ii) "इस समय जो उसके साथ थोड़ी-सी सहानुभूति दिखा देता, उसी को वह अपना शुभचिन्तक समझने लगती। उसकी सारी मलिनता

और खिन्नता मानो भस्म हो गई थी, वह सभी को अपना समझती थी। उसे किसी पर संदेह न था, किसी पर शंका न थी। कदाचित उसके सामने कोई चोर भी उसकी संपत्ति का अपहरण करता तो वह शोर न मचाती।" (गबन)

(iii) "सामने खड़ी लम्बी छुट्टियाँ और गर्मी के बेहद लम्बे आलस और उदास दिन ! कालेज क्या बंद हो जाएंगे जैसे समय गुजारने का एक अच्छा-खासा बहाना खतम हो जाएगा। वरना उसके नितांत घटनाहीन जीवन में मात्र कालेज जाना भी एक घटना की ही अहमियत रखता है। कालेज, और कालेज के साथ जुड़ी अनेक समस्याओं की आड़ में वह कम से कम किसी में व्यस्त रहने का संतोष तो पा लेती है। वरना उसकी अपनी जिन्दगी में कुछ भी तो ऐसा नहीं है जो क्षण-भर को भी उत्तेजना पैदा कर सके।" (आपका बंटी)

(iv) "खाने की मेज पर बैठते समय नजर नीची किए रहने पर भी अ ब स त्रिकोण उभर आता है और उसकी भुजाएँ एक सिरे से दूसरे तक दौड़ती रहती हैं। ममी की आँखे उसकी प्लेट में चिपकी हुई उसे घूरती रहती हैं। जब तक डॉक्टर साहब घर में रहते हैं, ममी कहीं भी रहें, कुछ भी करें, उनकी आँखे बंटी के आगे-पीछे ही घूमती रहती हैं, उसे ही देखती रहती हैं। वह पढ़ता है तब भी, वह खाता है तब भी, सोता है तब भी - सतर्क, चौकन्नी और घूरती हुई आँखे। पहले बंटी उन आँखों की एक तीखी-सी चुभन महसूस करता था, अब केवल आँखों का होना-भर महसूस करता है।" (आपका बंटी)

P.T.O.

4. किसी एक का उत्तर दीजिए :- (12)

(i) 'गबन' के किसी एक स्त्री पात्र की चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

(ii) औपन्यासिक तत्त्वों के आधार पर 'गबन' की समीक्षा कीजिए।

(iii) आपके अनुसार 'आपका बंटी' के किस पात्र को संबंधों की टूटन का त्रास सर्वाधिक झेलना पड़ा है ? उसके अन्तर्द्वन्द्व पर प्रकाश डालिए।

(iv) 'आपका बंटी' की मूल समस्या का उद्घाटन कीजिए।

5. हिन्दी नाटक के विकास का परिचय दीजिए। (10)

अथवा

रेखाचित्र की विकास यात्रा का उल्लेख कीजिए।

6. व्यंग्य के विकास अथवा प्रेमचंदोत्तर कहानी पर लेख लिखिए। (10)